

**Shri Tangamani:** May I seek a clarification?

**Shri A. M. Tariq:** What about the half-hour discussion?

**Shri T. B. Vittal Rao (Khammam):** I have to make a few observations on this Bill.

**Mr. Speaker:** Why not we dispose of this Bill? We will sit a few minutes more.

**Shri T. B. Vittal Rao:** I expected that the hon. Deputy Minister, when she moved yesterday for the consideration of the Bill, would elaborate certain aspects of it.

**Shri Mahanty:** I want to speak on it:

**Shri T. B. Vittal Rao:** I was a member of the Railway Convention Committee.

**Shri A. M. Tariq:** There is a little difficulty so far as I am concerned. I have to go at 6.30 P.M. to break my Ramzan fast. So I cannot stay any longer.

**Mr. Speaker:** Then further discussion of the Bill will stand over till tomorrow.

I have disposed of the point of order. This Bill will be taken up and disposed of first tomorrow after the Question Hour and the preliminary work are over.

18.06 hrs.

#### 'VISIT THE ORIENT' YEAR\*

**Mr. Speaker:** We shall now have the half-an-hour discussion to be raised by Shri A. M. Tariq.

\*Half-An-Hour Discussion.

**श्री अ० नू० तारिक (जम्मू तथा काश्मीर) :** मिस्टर स्पीकर, मैं ने यह आषाढ घंटे का डिस्कशन उस जवाब के सिलसिले में उठाया है जोकि जनाब वजीर ने भरे स्टांड क्वेश्चन नम्बर ८०७ के बारे में २६ दिसम्बर सन् १९६० को लोक सभा में दिया था।

मैं इस हाफ आवर डिस्कशन के जरिये अपने वजीर साहब की तबज्जह इन जरूरी बात की तरफ दिलाना चाहता हूँ कि हमारे मुल्क में बाहर के सैयाहों के लिये इस कदर इन्तजाम नहीं है जिस कदर कि सैयाह हमारे मुल्क में आते हैं। यह हकीकत है कि जहाँ तक हमारी पब्लिसिटी का ताल्लुक है या जहाँ तक टूरिस्ट्स के हिन्दुस्तान आने का ताल्लुक है हम बहुत अच्छा काम करते हैं और इस बारे में मैं वजीर साहब की तबज्जह उस स्टेटमेंट को तरफ दिलाना चाहता हूँ जोकि २१ मम्बरा की एक ट्रिविल एजेन्स टीम ने जिस का कि अमेरिकन मोबाइटी ऑफ ट्रिविल एजेन्स ने स्वीयर किया है, दिया है। उन के लीडर जीन माटिन ने हिन्दुस्तान में टूरिस्ट्स फामिलिटीज के बारे में २३ अक्टूबर सन् १९६० के हिन्दुस्तान टाइम्स में यह लिखा है : -

"Indian publicity about tourism in the U.S. was excellent and more than adequate. But tourist facilities, excepting in Delhi and Srinagar, were quite inadequate, and even places like Bombay and Calcutta needed more hotels".

हाउस में बार बार इस बात की चर्चा की जाती है कि हमारे मुल्क में इस टूरिज्म के जरिए करोड़ों रुपये की आमदनी होती है। मैं समझता हूँ कि अगर यह दुस्त हो और यह फिलवाकया प्रोपेण्डा नहीं है और यह हकीकत है कि हम फौरेन टूरिस्ट्स के जरिए इस मुल्क में करोड़ों

रूपया लाते हैं और उसको फाइनेंस मिनिस्टर साहब के हवाले करते हैं तो फिर हमारा यह फर्ज हो जाता है कि हम उन संस्थाओं को जो कि हमारे मुल्क में आते हैं उनको मुनासिब सहुलियात बहम पहुंचाये ।

अभी ३० अक्टूबर सन् १९६० के टाइम्स आफ इंडिया में अमेरिकन एक्सप्रेस के प्रेसिडेंट मि० हावर्ड एल क्लार्क ने फेल्लिटीज फौर टूरिस्ट्स के बारे में जो सुझाव दिया है और स्टेट मेंट दिया है उस में उन्होंने यह कहा है :—

“Among his other suggestions was that hotel accommodation of important tourist centres be increased. He had been told that Indian hotels provided lodgings for 9,000 to 10,000 for tourists”:

मैंने इस मिलमिले में वजीर साहब ने पूछा था :—

“whether this year we are expecting more than a lakh tourist?”

मेरे इस सवाल के जवाब में वजीर साहब ने यह कहा कि हमारे देश में होटल एकीमोडेथन सफािएंट न होने की वजह से हमारे टूरिज्म को बहुत बड़ा धक्का पहुंचेगा । मैं अब अपने वजीर साहब से पूछना चाहता हूँ कि जहां तक बड़ा टूरिस्ट्स को हिन्दुस्तान में लाने का ताल्लुक है उसकी पबलिसिटी वगैरह माकूल और दुस्त है लेकिन उनको अपने इस मुल्क में सहुलियात पहुंचाने के क्या इंतजाम हैं ? दिल्ली में लीजिये, कानकत में लीजिये, चाहं वम्बई में लीजिये सन् १९५७ के बाद से हुकूमत कितने नये और अच्छे हॉटल बनाने में कामयाब हुई है ? अलवत्ता दिल्ली में एक अशोक होटल है और जनपथ होटल है । अब जहां तक अशोक होटल का ताल्लुक है इस वक्त उम के बारे में कुछ कहना नहीं चाहना क्योंकि उसका मसला एस्टिमेंट्स कमेटी के पेशेनजर है ।

लेकिन जिस वक्त अशोक होटल के मुताल्लिक रिपोर्ट इस एवान में आयगी, तो उस वक्त मैं अपने ह्यालात का इषहार करूंगा । जहां तक जनपथ और दूसरे होटलों का ताल्लुक है, यह हकीकत है न सिर्फ टूरिस्ट्स को बल्कि हिन्दुस्तान के लोगों को भी उन में बहुत दिक्कत और तकलीफ होती है । उन में कमरे मिलने में बहुत दिक्कत होती है, जिन के रेट भी मार्केट रेट्स से ज्यादा होते हैं । इस का नतीजा यह है कि हमारे मुल्क में टूरिज्म को नुकसान पहुंचता है । मैं आप के सामने ३० अक्टूबर, १९६० के टाइम्स आफ इंडिया में छपी उस खबर को पढ़ कर सुनाना चाहता हूँ, जो कि मि० चिब की साउथ अमरीका की विजिट के बारे में थी :—

“One of Mr. Chib's main jobs during his present visit to South America will be to attract more visitors to India from that part of the world. So far not more than 500 Latin American tourists have come to India in one year. He hopes that the number can be increased to 5,000.”

यह बात मेरी समझ में नहीं आई और मैं समझना चाहता हूँ कि जब हमारे यहां पचास आदमियों के खाने का इन्तजाम है, तो फिर दो सौ आदमियों को क्यों बुलाया जाता है । इस से एक तो खाने में लज्जत नहीं रहती है और दूसरे बाहर के मुल्कों में हमारी बदनामी होती है ।

इस मुल्क में होटल वालों का मसला है । उनको पैसा चाहिए । चन्द एक तबकों और फिर्का के पास होटल हैं और उन में एक सब से बड़ा फिर्का, जिस का नाम लिये वगैर आप समझ सकते हैं, ऐसे बिजनेस में पैसा नहीं लगाना चाहता है, जहां गोश्त काटा और पकाया जाता है । हुकूमत पैसा लगाना नहीं चाहती और

### [श्री अ० मु० तारीक]

बाहर से पैसा आ नहीं रहा है । तो फिर सवाल यह है कि होटल इंडस्ट्री को कैसे बढ़ायेंगे । अमरीका और दूसरे मुल्कों के बड़े बड़े अखबारों में हमारी तरफ से इश्तहार छपते हैं कि खुजराहो विजिट कीजिये, यहां जाइये, वहां जाइये और इस पर करोड़ों रुपया खर्च किया जा रहा है । लेकिन मैं यह अर्ज करना चाहता हूँ कि इस तरह की पब्लिसिटी करने से पहले यह सोचना चाहिए कि आया खुजराहो में उन लोगों के रहने का कोई इन्तजाम भी है या नहीं । मैं बड़ी दयानतदारी के साथ अर्ज करना चाहता हूँ कि हुकूमत इस पब्लिसिटी से हिन्दुतान की कोई खिदमत नहीं कर रही है , बल्कि वह उन अच्छे मुल्कों में, जो कि टूरिज्म को सीरियसली लेते हैं, हिन्दुस्तान को बदनाम कर रही है । मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि इन बजूहात की बिना पर बीस फी सदी टूरिस्ट्स, जिन्होंने इस मुल्क में आना था, यहां नहीं आये और वे टोकियो और हांगलूलू बगैरह चले गये और उन्होंने यहां की विजिट कॅम्पल कर दी ।

मैं आप के सामने बाहर के मुल्कों की राय नहीं , बल्कि इस मुल्क के साबिक वज़ीर बराये टूरिज्म, श्री पाटिल की यह राय रखना चाहता हूँ कि हमारे मुल्क में होटल एकांमंडेशन, गाइड्स और दूसरी फ़ैसिलिटीज की हालत इतनी अकर्मसनाक है कि हमको उस पर शर्म आनी चाहिए ।

मैं ज्यादा वक्त नहीं लेना चाहता, क्योंकि आप की एक ग्रहम एपायंटमेंट है और मुझे भी रोजा खेलना है । मैं साफ़ लफ़्ज़ों में सिर्फ़ यह जानना चाहता हूँ कि जहां तक होटल फ़िनांस कार्पोरेशन का ताल्लुक है , हुकूमत उस बारे में कितनी मदद करना चाहती है, क्या हुकूमत इस

बात को ज़रूरी समझती है कि हमारे मुल्क में होटल इंडस्ट्री को बढ़ना चाहिए, और होटल वालों को सरकार की तरफ़ से सहायता मिलनी चाहिए, और अगर वह मिल सकती है , तो किस ज़रिये से मिल सकती है , क्या होटल फ़िनांस कार्पोरेशन बनाना ज़रूरी है, और अगर ज़रूरी है तो हुकूमत किस हद तक मदद कर सकती है ।

[شری اے - ایم - طارق - جموں  
تتھا کاشمیر) - مسٹر اسھوکر - میں نے  
یہ آدھ گھنٹے کا ڈسکشن اس جواب کے  
سلسلے میں اٹھایا ہے جو کہ جناب وزیر  
نے میرے استارڈ کویشنچن نمبر ۸۰۷ کے  
بارے میں ۹ دسمبر سنہ ۱۹۶۰ کو  
ٹوک سہا میں دیا تھا -

میں اس ہاف آور ڈسکشن کے  
ذریعہ اپنے وزیر صاحب کی توجہ اس  
ضروری بات کی طرف دلانا چاہتا ہوں  
کہ ہمارے ملک میں باہر کے سیاحوں  
کے لئے اس قدر انتظامات نہیں ہیں  
جس قدر کہ سیاح ہمارے ملک میں  
آتے ہیں - یہ حقیقت ہے کہ جہاں  
تک ہماری پبلیسٹی کا تعلق ہے یا  
جہاں تک ٹیورسٹس کے ہلدوستان آنے  
کا تعلق ہے ہم بہت اچھا کام کرتے ہیں  
اور س بارے میں میں وزیر صاحب  
کی توجہ اس اسٹیٹمنٹ کی طرف  
دلانا چاہتا ہوں جو کہ ۲۱ ممبروں کی  
ایک ٹریبول ایجنٹس ٹیم نے جس کو  
کہ امریکن سوسائٹی آف ٹریبول  
ایجنٹس نے اسپونسر کیا ہے - دیا ہے -  
ان نے لیڈر جون مارٹن نے ہلدوستان  
میں ٹورسٹس کے بارے میں ۲۳ اکتوبر

[ شری اے - ایم - طارق ]

سنہ ۱۹۶۰ کے ہلدوستان ٹائمس میں  
یہ لکھا ہے -

"Indian publicity about tourism in the U.S. was excellent and more than adequate. But tourist facilities, excepting in Delhi and Srinigar, were quite inadequate, and even places like Bombay and Calcutta needed more hotels".

ہاؤس میں بار بار اس بات کی  
چرچا کی جاتی ہے کہ ہمارے ملک  
میں اس ٹوریزم کے ذریعہ کروڑوں روپیہ  
کی آمدنی ہوتی ہے - میں سمجھتا  
ہوں کہ اگر یہ درست ہو اور یہ فل واقعہ  
پروپیگنڈا نہیں ہے اور یہ حقیقت ہے  
کہ ہم فورڈین ٹورسٹس کے ذریعہ اس  
ملک میں کروڑوں روپیہ لاتے ہیں اور  
اس کو فائیننس منسٹر صاحب کے  
حوالے کرتے ہیں تو پھر ہمارا یہ فرض  
ہو جاتا ہے کہ ہم ان سیاحوں کو جو کہ  
ہمارے ملک میں آتے ہیں ان کو  
مناسب سہولیات بہم پہنچائیں -

ابھی ۳۰ اکتوبر سنہ ۱۹۶۰ کے  
ٹائمس آف انڈیا میں امریکن  
ایکسپریس کے پریسیڈنٹ مسٹر ہارز  
ایل - کلارک نے فیسیلیٹیز فور  
ٹورسٹس کے بارے میں جو سچھاؤ دیا  
ہے اور اسٹیٹمنٹ دیا ہے اس میں  
انہوں نے یہ کہا ہے :-

"Among his other suggestions was that hotel accommodation of important tourist centres be increased. He had been told that Indian hotels provided lodgings for 9,000 to 10,000 tourists".

میں نے اس سلسلے میں وزیر  
صاحب سے پوچھا تھا :-

"whether this year we are expecting more than a lakh tourists?"

میرے اس سوال کے جواب میں وزیر  
صاحب نے یہ کہا کہ ہمارے دیس میں  
ہوٹل ایگومونڈیشن سہولیت نہ  
ہونے کی وجہ سے ہمارے ٹوریزم کو بہت  
بڑا دھکہ پہنچتا - میں اب اپنے وزیر  
صاحب سے پوچھنا چاہتا ہوں کہ جہاں  
تک ٹورسٹس کو ہلدوستان میں لانے کا  
تعلق ہے اسکی پہلہستی وغیرہ معقول  
اور دوست ہے لیکن ان کو اپنے اس  
ملک میں سہولیات پہنچانے کے کہا  
انتظامات ہیں - دلی میں لہجئے -  
کلکتہ میں لہجئے - چاہے بمبئی میں  
لہجئے سنہ ۱۹۴۷ کے بعد سے حکومت  
کتنے نئے اور اچھے ہوٹل بنانے میں  
کامیاب ہوئی ہے - البتہ دلی میں  
ایک اشوک ہوٹل ہے اور جڈپتہ ہوٹل  
ہے - اب جہاں تک اشوک ہوٹل کا  
تعلق ہے اس وقت اس کے بارے میں  
میں کچھ کہنا نہیں چاہتا کیونکہ اس  
کا مسئلہ ایسٹیمینٹس کمیٹی کے پیس  
نظر ہے -

لیکن جس وقت اشوک ہوٹل کے  
متعلق رپورٹ اس ایوان میں آئیگی تو  
اس وقت میں اپنے خیالات کا اظہار  
کروں گا - جہاں تک جن پتہ اور دوسرے  
ہوٹل و کا تعلق ہے یہ حقیقت ہے کہ نہ  
صرف ٹورسٹس کو بلکہ ہلدوستان کے

[شری اے۔ ایم۔ طارق]

لوگوں کو بھی ان میں بہت دقت اور تکلیف ہوتی ہے۔ ان مہن کمرے ملنے میں بہت دقت ہوتی ہے۔ جن کے ریت بھی مارکیٹ ریتس سے زیادہ ہوتے ہیں۔ اس کا نتیجہ یہ ہے کہ ہمارے ملک میں ٹورزم کو نقصان پہنچتا ہے۔ میں آپ کے سامنے ۳۰ اکتوبر ۱۹۶۰ کے ٹائمز آف انڈیا میں چھپی اس خبر کو پڑھ کر سنانا چاہتا ہوں جو کہ مسٹر چب کی ساؤتھ امریکہ کی وزٹ کے بارے میں تھی۔

“One of Mr. Chib's main jobs during his present visit to South America will be to attract more visitors to India from that part of the world. So far not more than 500 Latin American tourists have come to India in one year. He hopes that the number can be increased to 5,000.”

یہ بات میری سمجھ میں نہیں آئی اور میں سمجھنا چاہتا ہوں کہ جب ہمارے یہاں پچاس آدمیوں کے کھانے کا انتظام ہے تو پھر دو سو آدمیوں کو کیوں بلایا جاتا ہے۔ اس سے ایک تو کھانے میں لذت نہیں رہتی ہے اور دوسرے باہر کے ملکوں میں ہماری بدنامی ہوتی ہے۔

اس منک میں ہوٹل والوں کا مسئلہ ہے۔ ان کو پیسہ چاہئے۔ چلند ایک طبقوں اور فرقوں کے پاس ہوٹل ہیں اور ان میں ایک سب سے بڑا فرقہ۔ جس کا نام لئے بنہر آپ سمجھ سکتے ہیں۔ ایسے بزنس میں پیسہ لگانا نہیں چاہتا ہے جہاں کوشش کا

اور پکایا جاتا ہے۔ حکومت پیسہ لگانا نہیں چاہتی اور باہر سے پیسہ آ نہیں رہا ہے۔ تو پھر سوال یہ ہے کہ ہوٹل انڈسٹری کو کیسے برساتھائیں گے۔ امریکہ اور دوسرے ملکوں میں بڑے بڑے اخباروں میں ہماری طرف سے اشتہار چھپتے ہیں کہ کھجراہو وزٹ کیجئے۔ یہاں جائے وہاں جائے اور اس پر کروڑوں روپیہ خرچ کیا جا رہا ہے۔ لیکن میں یہ عرض کرنا چاہتا ہوں کہ اس طرح کی پیلیسٹی کرنے سے پہلے یہ سوچنا چاہئے کہ آیا کھجراہو میں ان لوگوں کے رہنے کا کوئی انتظام بھی ہے یا نہیں۔ میں بڑی دیانت داری کے ساتھ عرض کرنا چاہتا ہوں کہ حکومت اس پیلیسٹی سے ہندوستان کی کوئی خدمت نہیں کر رہی ہے بلکہ وہ ان اچھے ملکوں میں جو کہ ٹورزم کو سیریسلی لہتے ہیں ہندوستان کو بدنام کر رہی ہے۔ میں آپ کو یہ بتانا چاہتا ہوں کہ ان وجوہات کی بنا پر بیس فیصدی ٹورسٹس۔ جہڑوں نے اس ملک میں آنا تھا یہاں نہیں آئے اور وہ ٹوکیو اور ہونولولو وغیرہ چلے گئے اور انہوں نے یہاں کی وزٹ کیٹس کر دی۔

میں آپ کے سامنے باہر کے ملکوں کی رائے نہیں بلکہ اس ملک کے سابق وزیر برائے ٹورزم شری پاتل کی یہ رائے رکھنا چاہتا ہوں کہ ہمارے ملک میں ہوٹل ایکوموڈیشن گانڈز اور دوسری فہسٹلیٹی کی حالت انلی افسوسناک ہے کہ ہم کو اس پر شرم آتی چاہئے۔

میں زیادہ وقت نہیں لینا چاہتا  
 کہونکہ آپ کی ایک اہم ایپائنٹمنٹ  
 ہے اور مجھے بھی روضہ کھولنا ہے۔ میں  
 صاف لفظوں میں صرف یہ جاننا چاہتا  
 ہوں کہ جہاز تک ہوٹل فلانس  
 کارپوریشن کا تعلق ہے حکومت اس بارے  
 میں کنفی مدد کرنا چاہتی ہے۔ کیا  
 حکومت اس بات کو ضروری سمجھتی  
 ہے کہ ہمارے ملک میں ہوٹل انڈسٹری  
 کو بڑھانا چاہئے اور ہوٹل والوں کو سرکار  
 کی طرف سے سہایتا ملنی چاہئے اور اگر  
 وہ مل سکتی ہے تو کس ذریعے سے مل  
 سکتی ہے۔ کیا ہوٹل فلانس کارپوریشن  
 کا بلانا ضروری ہے اور اگر ضروری ہے تو  
 حکومت کس حد تک مدد کر سکتی ہے۔]

**Mr. Speaker:** Shri Tangamani. He may put a question.

**Shri Tangamani (Madurai):** I would like to know whether, in addition to the facilities given to the foreign tourists because of certain prior arrangements, Government are contemplating extending concessions to tourists of our own nationality during the year 1961.

My second question will be: will a separate Directorate of Tourism be set up as recommended by the Tourist Development Committee?

My third question is whether certain States still do not have separate whole-time officers doing the work in the Department of Tourism.

My fourth question is: what special arrangements are being made by the Centre to extend help to those States where there are a large number of Hindu temples still preserved, which attract a large number of tourists. I mean those areas in the South like Madras State where these temples are all preserved and are still attracting a

large number of tourists. Several temples are still not known to many of the tourists.

**The Minister of State in the Ministry of Transport and Communications (Shri Raj Bahadur):** Mr. Speaker, Sir, I would agree and readily agree with my hon. friend, Shri Tariq, who has been taking a keen interest—and I am glad that it is so—in tourist promotion activities and tourist promotion measures that the Government of India is taking—I would agree with him to the extent that we have not been keeping pace with the increasing number of tourists that come to our country so far as the expansion of our hotel accommodation is concerned.

It is a well-known fact that whereas the number of tourists coming to our country has increased by about 500 per cent, the hotel accommodation has not increased by more than 30 or 33 per cent. The facts of the situation are clear. The hotel industry requires high costs so far as investment is concerned for the construction of hotels. Private capital finds other avenues for investment that are perhaps more profitable and the hotel industry is not as attractive for them as we would like it to be.

Apart from that, it is also a fact that the measures that we have taken so far in regard to the encouragement of the hotel industry have not yet borne fruit to the extent we should have liked but they are beginning to do so.

He has put me a pertinent question—what steps we propose to take in order to encourage people to invest in the hotel industry so that hotel accommodation might be increased.

I would say that the first step we took was an amendment of the Industrial Finance Corporation Act so as to enable the hotel industry to obtain loans without any condition on the floor limits of loans. But that

[Shri Raj Bahadur]

facility was available only to hotels run by public limited companies. So, that could not be availed of. There was only one solitary exception and that was *Hotel Nataraj* that has come up in Bombay, which has been granted a loan of about Rs. 9 lakhs.

**Shri A. M. Tariq:** May I know the reasons?

**Shri Raj Bahadur:** Because most of the organisations—the companies or establishments—that are running the hotel industry are either private limited companies or private individuals; and the facility of loans from I.F.C. is available only to public limited companies. So, the States have been advised that the State Finance Corporation Acts may be amended with a view to extend the facilities as best as we can.

The hon. Member was right when he suggested that there are only two alternatives to meet the situation. Either Government should step in in this particular industry and fill up the gap, or we should set up a Hotel Finance Corporation so as to finance such ventures and enterprises by the private sector as are forthcoming in this direction. I would only say that both these proposals deserve and merit consideration. But I would not say any thing about these unless and until some positive and concrete results have been achieved.

The hon. Member might, perhaps, be interested to know what progress has been made during these years so far as the actual increase in hotel capacity is concerned. There were 4 or 5 places which were recommended specially by the Hotel Standards Committee for some better attention for hotel facilities. They were Calcutta, Agra, Delhi and Madras. I would like to state the position in regard to some of these, including Bombay.

In Bombay as I have just now mentioned, a new hotel with a capacity of 100 beds has come up. This is *Hotel Nataraj*. We extended all

facilities and assistance to it, as best as we could, in the matter of provision of import licences for equipment, telephones, etc., and all other assistance including also the facility of loan.

Then, there is another proposal for a hotel known as *Sun in Sand*. This hotel would provide a capacity of 150 beds. It would come up on Juhu Beach. We have extended our assistance to this one also. In Delhi, 20 new rooms have been added to the Claridges. The Alps restaurant has also put up a proposal. It is under consideration of the Ministry of Works, Housing and Supply. The Oberoi (International), which is a East India Hotels Limited concern had applied for a loan from the IFC and that particular request of theirs is under consideration. There is also a proposal of the WHS Ministry to establish a hotel known as the Janata Hotel.

**Shri A. M. Tariq:** You may call it Janata Sarai.

**Shri Raj Bahadur:** There may be a difference of opinion in regard to the selection of name but we may leave it to the Ministry or the organisation concerned.

**Shri A. M. Tariq:** Why not to the tourists who stay there?

**Shri Raj Bahadur:** The tourists will not name it. (*Interruptions*)

In Calcutta Messrs Ritz Private Limited of Bombay have put up a proposal for setting up a hotel with 100 rooms by floating a public limited company with foreign participation which we have sanctioned.

**Mr. Speaker:** Why foreign participation even for hotels?

**Shri Raj Bahadur:** Because there is some amount of foreign exchange needed for the equipment and foreign exchange is not easily available. We do not object to that.

**Mr. Speaker:** Perhaps managers and the other people will also be foreigners?

**Shri Raj Bahadur:** That will not be so. We will keep a vigilant eye on these things.

**Shri Dinesh Singh (Banda):** Will this agreement be placed on the Table of the House?

**Shri Raj Bahadur:** It is a private agreement. If the party concerned is willing to do so, it is all right. Otherwise, we shall be able to place before the House the terms and conditions on which we sanctioned it.

श्री अ० म० तारिक: मैं जानना चाहता हूँ कि फारेन कोलेबोरेशन किसी खास होटल के लिए है या यह गवर्नमेंट आफ इंडिया की पालिसी है? अगर यह पालिसी है तो नटराज होटल के मामले में फारेन कोलेबोरेशन को क्यों जायज़ करार नहीं दिया गया?

[شری اے - ایم - طارق - مہن]  
جاننا چاہتا ہوں کہ فارین کولہبوریشن کسی خاص ہوٹل کے لئے ہے یا یہ گورنمنٹ آف انڈیا کی پالیسی ہے -  
اگر یہ پالیسی ہے تو نتراج ہوٹل کے معاملے میں فارین کولہبوریشن کو کیوں جائز قرار نہیں دیا گیا -

**Shri Raj Bahadur:** I am not aware of any refusal to the *Nataraja Hotel* and I do not know whether they applied for foreign collaboration and that it was refused. Perhaps it may be in the special knowledge of the hon. Member. Foreign collaboration is not tabooed. We have more than one proposal of this type. That is all that I can say about it.

In Agra, the Clarks of Varanasi propose to put up a hotel with 100 rooms. The East India Hotels are proposing to put up a hotel there

and some steps have been taken in that direction. We have recently given another type of encouragement to this industry—income-tax holiday. It is now proposed to be provided under the Income-Tax Act.

**Mr. Speaker:** What is meant by income-tax holiday?

**Shri Raj Bahadur:** For a period of five years, on incomes that are derived from hotels, under certain prescribed conditions, there will be no income-tax. The relevant section is 15(c) or something like that.

**Mr. Speaker:** That is for companies.

**Shri Raj Bahadur:** The same facility is extended to them. We are also helping them to get suitable plots for constructing hotels. We are having some negotiations with the LIC but we cannot say at this stage whether they would like to help this industry.

The first question referred to by my hon. friend Shri Tangamani is not quite relevant to this particular issue. The question that was tabled—No. 807—in December last pertained to the 'Visit Orient Year'. That was with a view to attract foreign tourists . . . . . (Interruptions)

**Shri Tangamani:** We give certain concessions to the foreign tourists. What I would like to know is, why should we deny them in this year when there is so much tourist consciousness?

**Shri Raj Bahadur:** As the hon. Member might be aware—if he is aware of the context—the "Visit the Orient" "Visit India Year" as we call it, is part of a larger programme which has been initiated by the ECAFE and we have decided to collaborate or participate in that programme. That is with a view to invite tourists from abroad so that we might make this whole programme or campaign a success. The concessions that are being allowed to foreign tourists on this occasion may not be made available to the home tourists. Then he



[Shri Raj Bahadur]

referred to the question of a separate directorate of tourism for each State. That matter is under our consideration. He asked whether separate officers had been appointed to look after the tourist industry in the various States. Some States have fallen in line with that recommendation or decision of the Government. We are trying to persuade the others to fall in line and appoint special officers to look after the activities of the tourists department. His last question—it was not clear to me—was about the arrangement about temples. I think what he meant was about the facilities....

**Shri Tangamani:** I was talking about temples which have got historical importance like Gangaikonda Cholapuram. The tourists do not know its location and it is not in the tourist guide either.

**Shri Raj Bahadur:** I will place before the House or send to the hon. Member all the literature that we are producing about temples in the south.

**Shri A. M. Tariq:** Beautiful picture postcards about the temples may also be sent.

**Shri Raj Bahadur:** If there are picture postcards they can also be furnished. From that literature or the folders that we have published he will know that we are trying to do some publicity about these temples. But one difficulty in regard to these temples is that foreigners are not allowed to enter many of them. Sometimes we find ourselves confronted with an embarrassing

situation. We invite foreign tourists to see the temples and when they go there they find that the temples are not open to non-Hindus or foreigners or something like that. That is also a point to be taken into consideration. We cannot embark upon a programme or campaign of publicity on a wider scale in respect of these temples and then be confronted with such a situation. So we would like to proceed with due caution in this behalf.

I should say a word of thanks to my hon. friend Shri Tariq for focusing our attention on this problem. It is a very important matter. I would like to assure him that we are trying to do our best. Let him realise—and I think the House will bear with me when I say that—that so far as hotel accommodation is concerned it is not a problem peculiar to our country. Hotel accommodation is lagging behind in practically every country which has got to entertain tourists from foreign countries; of course, it is in a rather accentuated form here. But we are trying to do all that we can within the limited resources available to us and the limited resources which the private sector is prepared to invest in this important industry.

With these words, Sir, I thank Shri Tariq once again.

18.29 hrs.

*The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Wednesday, March 15, 1961/Phalguna 24, 1882 (Saka).*